बचपन एवं वृद्धावस्था से अति श्रेष्ठ है युवा काल

विकारों की कालिमा से दूर,दुनियादारी के झंझटों से परे,मतलबी, फरेबी, भ्रष्टाचारियों से चंगुल से मुक्त,हताशा,निराशा,उदासी की छाया से परे, हिंसा, कठोरता,कुटिलता व जड़ता से कोसों दूर,आनन्द से भरपूर,एक सच्चा इनोसेन्ट जीवन, बचपन कहा जा सकता है व सचमुच ऐसा ही है, कई लोग इन्हीं विशेषताओं को देखकर जब दुखी होते हैं तो कहते हैं कि मेरा सब कुछ कोई ले ले और मेरा बचपन वापस ला दे या बचपन के दिन भी क्या दिन थे ! आदि आदि । लेकिन हम तो समझते हैं यह भी एक स्वार्थ है क्योंकि बचपन सिर्फ अपने लिए होता है इसलिए अपने लिए तो ठीक कहा जा सकता है क्योंकि इस उम्र में कोई पाप नहीं करते,कोई दुख भी नहीं फील नहीं होता है,किसी से नफरत व घृणा,ईर्ष्या भी नहीं करते,ये अच्छी ही नहीं अति उत्तम बातें हैं परन्तु बचपन दूसरों पर आश्रित होता है,समाज का कुछ कर्ज उतारें, अपना फर्ज अदा करें ऐसा भी नहीं होता। किसी के दुख में सहयोगी बनें,किसी को सुख दें किसी की मदद कर सकें ऐसा भी नहीं होता है। कभी भी बड़े व्यक्ति को छोटे बच्चे से आशीर्वाद लेने के लिए नहीं कहा जाता, जबकि छोटे बच्चे को महात्मा कहा जाता है और वह पवित्र भी होता है, सम्पूर्ण उर्जावान होता है। कारण? शायद, बच्चे में निर्मलता का बीज तो है, पर परोपकार की धरनी नहीं है, सत्यता की धूप तो है, पर स्नेह का पानी नहीं है, करूणा का सहयोग नहीं है, कुटिलता व जटिलता रूपी कांटे नहीं, पर–उपकार व शुभ भावना की खाद भी तो नहीं है, अहंकार का कीड़ा नहीं है,पर दायित्व का बोध भी तो नहीं, सरलता की ऊर्जा तो है पर गम्भीरता की उष्मा नहीं, निश्चलता का सूर्य तो है पर स्थात्यिव का सागर नहीं, करिश्माई व्यक्तित्व तो है पर कुशलता का आधार नहीं। बुजुर्गों को अनुभवों का धनी तो कहा जा सकता है पर कुछ कर गुजरने का जज्बा,आसमान छूने की तमन्ना,सितारों को पाने का अरमान,सागर को थाह लेने का उत्साह बुलन्दियों पर पहुँचने का जुनून, शारीरिक कर्मठता की कमी के कारण बड़ा कार्य संभव नहीं हो सकता। पर युवाओं में पहाड़ों की अडिगता ,वायु की

गतिशीलता,अग्नि सम प्रखरता, पानी सम स्पष्टता और युवाकाल देने के लिए ही होता है जबकि बचपन व वृद्धावस्था में लेना ही पड़ता है। इसी कारण शायद युवा काल जीवन का स्वर्णकाल है

ओम शान्ति